ISSN 2349-638X

REVIEWED INTERNATIONAL JOURNAL

AAYUSHI INTERNATIONAL INTERDISCIPLINARY RESEARCH JOURNAL (AIIRJ)

MONTHLY PUBLISH JOURNAL

VOL-I ISSUE-III AUG 2014

Address
- Vikram Nagar, Boudhi Chouk, Latur.
- Tq. Latur, Dis. Latur 413512
- (+91) 9922455749, (+91) 9158387437

Email
- editor@aiirjournal.com
- aiirjpramod@gmail.com

Website
- www.aiirjournal.com

CHIEF EDITOR – PRAMOD PRAKASHRAO TANDALE

Aayushi International Interdisciplinary Research Journal (AIIRJ)
Vol - I | Issue - III | AUGUST | 2014 | Monthly | ISSN 2349-638X

केशव की नारी—भावना

डॉ.श्री.ईश्वरप्रसाद रामप्रसाद बिदादा,

सहाय्यक अधिव्याख्याता,

दयानंद वाणिज्य महाविद्यालय,लातूर

केशव की भक्तिकालके अन्य कवियों में गणना की जाती है। उनकेरामचन्द्रिका आदि काव्यों में भक्ति से ओत—प्रोत भावों के साथ रीति व श्रृंगारिक प्रवृत्तियों का समावेश भी दृष्टिगत होता है। इसका मूल कारण केशव के युग सं. १६१२—१६७४(१५५५—१६१७ इ.)में अन्त: सलिलापावनधारा श्रृंगार के कुण्ड में अवगाहन करने की उत्सुक थी ।आचार्य केशव के जीवन का अधिकांश भाग भी दरबारों की रूनझुन व चकाचौध कर देने वाली साज—सज्जा में ही व्यतीत हुगा था।अत: यह असम्भव था कि कवि केशन पर उस श्रृंगारिक वातावरण का प्रभाव न पडता। परिणामत: केशप ने भी मर्यादा पुरूषोत्तम राम को एक वैभव—सम्पन्न महाराजा के रूप में अंकित किया है—

“पन्नगी नगी कुमारि,आसुरिसुरिनिहारि,

विवि बीन किन्नरीन,किन्नारी बजावें

मानी निष्काम भक्ति शक्ति आप आदनीसु

देहन धरि प्रमन भरि,भजन भेद गावें। ”

नागकन्याएँ,काश्मीरादि पार्वत्य देशों की सुन्दरी कन्याएँ,असुर,देव,किन्नर कन्याएँ सब मिलकर रामन्द्रजी का मनोरंजन करती है। यह कवि पर तत्कालीन राजमहलों का प्रभाव परिलक्षि होता है।इतना श्रृंगारिक प्रभाव होने पर भी केशव तत्कालीन नारी समाज के लिये पातिव्रत धर्मपालन का विधान ही करते हैं और पातिव्रत धर्म म नारी की गति बताते हैं।उनके कथनानुसार **नारी को कोई उपासना,प्रार्थना,धार्मिक अनुष्ठान करने की आवश्यकता नहीं है,पति—सेवा ही उस इन सबविधानों का फल देने वाली है।इनके अतिरिक्त अन्य सभी सम्बंध पति के बिना दु:खदायी हैं।** केशवदास नारी के लिये पतिधर्म ही सब प्रकार के सुखों का मूल समझते हैं।पतिव्रता नारी को मनसा,वाचा,कर्मणा पकित की ही सेवाश कनरी चाहिये,यही उसका परमोधर्म है।विलासी—वातावरण से प्रभावित होने पर भी नारी को एकनिष्ठ तथा आदर्श पतिव्रता के रूप में ही देखना चाहते है—

''नारी तजै न अपना सपने हू भरतार।

पंगु गुंग बोरा बधिर अंध अनाथ अपार।।

अंध अनाथ अपार वृध्द बावन अति रोगी।

बालक पंडु कुरुप सदा कुबचन जड जोगी।।

कलही कोढि भीरु चोर ज्वारी व्यभिचारी ।

आम अभागी कुटिल कुमति पति तजे न नारी २।।''

पति गुंगा,बहरा,अंधा,पंगु,आदि कैसा भी हो,किंतु आदर्श नारी को पति–सेवा ही परमोधर्म समझकर तथा एकनिष्ठ होकर उसीमे रत रहना चाहिए। नारी के पती के साथ सती होने का आदर्श माना है ३। पुन: उन्होने विधवा के लिए आचार–विचार एवं कष्ट और साधना तथा पुत्र की आज्ञा में आमरण जीवन व्यतीत करने का विधान किया है–

खाय मधुरात्र नही पाय पनही धरें । काय मन वाच सब धर्म करिबो करे ।

कुच्छ उपवास सब इन्द्रियन जीतहीं । पत्र सिख लीन तन जों लगि अतीतहीं ४।

केशवदास नारी के लिये पतिव्रता–धर्म को श्रेष्ठ मानते हुये पति पत्नी दोनो का ही जीवन में अटुंट सम्बध बताते है,दोनो के जीवन मे एक–दुसरे की बराबर महत्ता है। पति के बीना पत्नी यदि दीन है,तो पत्नी बीना पति भी उसी प्रकार तेजहीन है,जिस प्रकार रात्रि में चंद्रमा के बिना चॉदनी और चॉदनी के बिना चंद्रमा प्रकाशहीन होता है। **अत: नर–नारी दोनों ही एक दुसरे के बिना व्यक्तित्वहीन है।** तुलसी आदि के समान केशवदास ने भी नारी को भोग एवं संसारासक्ति का कारण माना है,किंतु **उनके काव्य में नारी – भर्त्सना की प्रवृति न्यु नही दृष्टिगत होती है ५"।**

केशव कालीन समाज में श्रृंगारिक जीवन और राजदरबारों में विलासी वातावरण होने के फलस्वरूप नारी अन्त:पुर की साज–सज्जा,विलास–कक्ष की शोभा की अनिवार्य उपकरण समझी जाती थी। **यह विलास–वैभवमें ऐश्वर्य की वस्तु मानी गई है। उस समय की नारी संगीत, वीणावादन , नृत्य आदि में निपुशुण होती थी** । व्यवहारिक जीवन की समस्याएॅ उपके समक्ष नही थी! ठस समय नारी स्वयं ही विलासरत रहती जान पडती है। कवि ने रावण के राज–गृह के चित्रण में किसी नारी के विलासी जीवनका वर्णन इस प्रकार किया है–

"पियें एक हाला गुहें एकमाला। बनों एक बाला नवे चित्रशाला

कहुं कोकिला कोक की फारिका को । पढावैंसुवा लै सुकी सारिका कों ६"।

रावण के राज–गृह की सभी स्त्रियॉ कोई मदिरापान करने में,कोई सज्जित होने तथा कोई नाचने में लगी है!अन्य स्त्री तोता–मैना को ही कोकशास्त्र पढाने में संलग्न है !अेत: जहॉ स्वयं ही नारी विलासी –जीवन में तत्पर हो उस काल क समाज की गती तो स्वयं ही पतनोन्मुख होगी !विलास की सामग्री तथा जीवन की आवश्यक सामग्री समझी जाने पर भी समाज में उसको कोई उच्च स्थान उपलब्ध नही था। **समाज में नारियों के लिये पर्दा था अथवा नाहकीं,स्पष्ट नहीं है!विशेष अवसरों पर,राम की बारात का जुलूस देखने के लिये अबरियों पर चढकर देखती है७। दशरथ–मरणपर उपके शव–दर्शनार्थ नारियॉ बाहर अवश्य निकली थी,**अन्यथा अन्त:पुर से निकलने का विधान कही भी चित्रित नही किया!अत:इन दोनों अवसरोंपर नारी की स्थिती से ऐसा ज्ञात होता है,कि पर्दा–प्रथा उच्च घराने की स्त्रियों के लिये अवश्य थी,निम्नकोटि की कनकारियॉ जो जीविका आदि स्वयं अर्जन करती थी उनमें भले ही पर्दा न रहा हो!बहु–विवाह प्रचलित था,इनका प्रमाण अन्त:पुर की अनेक रानियॉ आदि है!तत्कालीन सामाजिक विषमताओं मे भी पतिव्रनारी पवित्र तथा पुज्य समझाी जाती थी! **रावण के प्रति मन्दोदरी के कथन–"पतिव्रतासीता को साधारण प्राणी न समझो"** से स्पष्ट होता है कि उस समय पतिव्रता आदरणीया तथा श्रध्दा की पात्र होती थी!धार्मिक काम बिना पत्नी के पूर्ण नही समझे जाते थे!रामचन्द्रजी के व्दारा ऋषियों से यह पूछने पर कि क्या मै अपत्नीक यज्ञ कर सकता हूँ,तब ऋषियों ने यह उत्तर दिया था–

"धर्म कर्म कछु कोजई,सफल तरूणि के साथ !

त बिन जो कछु का जई,निष्फल सोई नाथ "!!

अर्थात पत्नी के साथ ही धर्म–कार्य करने चाहिये,अन्यथा वे सफल नहीं समझे जाते थे! अतएव केशवदास में भी धार्मिक कार्य पत्नी के बिना सम्पन्न नहीं होते थे ! केशव के विचार में पतिव्रता, गुणशीला कर्तव्यपरायणा पत्नी के त्याग की अकल्याणकारी बताया है–

"प्रिय पावनि प्रिय वादिनी पतिव्रता अतिशुध्द

जग की गुरू अरू गुर्बिणी छाडत बेद विरूध्द "!!

भरत के व्दारा प्रियवादिनी,पवित्र तथा पतिव्रता सीता के त्याग को वेद–विरूध्द बताकर नारी के आदर्श एवं मर्यादित रूप को आदर प्रदान किया गया है !

सम्पुर्ण केशव—काव्य को समीक्षात्मक रूप से देखने पर यहीं तथ्य निकलता है कि सामान्य रूप से पकितव्रता,कर्तव्यनिष्ठा ,गुणशीला तथा आदर्श—नारी के सत् रूप को समाज में सर्वोपरि स्थान था!धार्मिक कृत्यों के प्रतिपादश्न में नारी का विशेष महत्व था ! पतिवृता प्रियवादिनी तथा सर्वगुण—सम्पन्ना पत्नी का त्याग वेद—विरोधी समझा जाता था ! नारी के असत् रूप को सद् मार्ग का अवरोधक,अविद्या माया का प्रतीक तथा मानव को कुमार्ग पर भ्रमित करने वाला माना जाता था! नरी के इस रूप की कवि ने स्थान स्थान पर आलोचना भी की है ! **राम के चरित्र की आदर्शवाशदिता को अपनी कसौटी बनाने वाले इन कवियों को नारी की सामान्य दुर्बलताऍ क्षम्य न होकर आलोचना तथा किनन्दा का कारण बनी है,परन्तु साथ ही नारी का आदर्श रुप,लोक और समाज में प्रदीप की मंजुल दीप्ति प्रशन करणेवाला स्वरुप इनको काम्य और वर्णनीय भी रहा है।** अत,केशव की धर्मनिष्ठा,कर्तव्य—परायणा पतिव्रता नारी का रुप ही अभीष्ट रही है। इसलिये नारी के विलासी रुप की निन्दा तथा आलोचना करते हुए,आदर्श नारी को महत्व प्रदान किया गया है। केशव ने भी अपने काव्य में तुलसी के समान ही पतिव्रत धर्म तथा मर्यादित जीवन को नारी जीवन का मापदण्ड स्वीकार किया है। पती सेवा में ही नारी—जीवन का साफल्य समझा है।

संदर्भ सूची

१. केशव कौमुदी,उत्तरार्ध—२९ वां प्रकाश—पृ.१२६
२. रामचन्दिका पुर्वर्ध्द नवा प्रकाश छनद १६, पृ.१३२
३. नारी न तजहि मरे भरतहि ता संग सहहि धनंजय भारहिं। वही छनद १७ पृ.१३३
४. रामचन्द्रिका—पूर्वार्ध्द—नवा छनद १८,१९ पृ.१३३
५. मययुगीन हिन्दी साहित्य में नारी—भावना—डा.उषा पाण्डेय, पृ.१३६
६. वही पुर्वार्ध्द—तेरहवां प्रकाश—छन्द ५१, पृ.२१५
७. वही पुर्वार्ध्द— आठवा छन्द ९, पृ.१२५